Sub - Philosophy

B.A. I. (Hons) Paper - II

Realism यथार्थवाद या वस्तुवाद

यथार्थवाद प्रत्ययवाद का विरोधी मत है। इसके अनुसार वस्तुएँ मन से बाहर अपनी स्वतंत्र सत्ता रखती है कोई भी ज्ञान प्राप्त करने वाला ज्ञाता हो न हो किन्तु वे वस्तुएँ रहेंगी ही। उन वस्तुओं का रहना ज्ञाता पर निर्भर नहीं है। बाह्य पदार्थ अपने स्वरूप में सत्य है जो कुछ भी नहीं है। वह इस अर्थ में सत्य है कि उसका स्वयं का किसी भी ज्ञाता के निमंत्रण से स्वतन्त्र अपना निजी जीवन एवं क्रिया है।

वस्तु का मन से परे अपना अलग का अस्तित्व मानने वाले इस यथार्थवाद के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर हम उसके दो प्रकार पाते हैं। प्रथम प्रकार के यथार्थवाद में डेकार्ट और लॉक के विचार है और यह विचार-धारा हेगेल से पूर्व रही है। द्वितीय विचार धारा हेगेल के बाद का है जो कि हेगेल के विचारों के प्रतिक्रियात्मक परिणामों का स्वरूप है।

कुछ दार्शनिकों के अनुसार हम बाह्य पदार्थों का ज्ञान सहज ही उन्हीं के वास्तविक स्वरूप से पा लेते हैं। हम वस्तुओं को सीधे देखते तथा जानते हैं। वस्तुएँ बिलकुल वैसी ही है जैसे की वे हमें दिखाई देती है और वे हमें बिलकुल वैसी ही दिखाई देती है जैसी कि वे वास्तव में है। वस्तु के दिखाई देने वाले स्वरूप और उनके वास्तविक स्वरूप के बीच किसी भी प्रकार की विभेदक रेखा नहीं है। हम सदा वस्तु को बिलकुल

Scanned with CamScanner